जो झुक सकता है वो सारी दुनिया को झुका सकता है।
– अज्ञात

देश में हिंसा का तांडव बदस्तूर जारी

सभी पक्षों की स्वाभाविक कोशिश पूरी सत्ता पर कब्जा जमाने की होगी, जो बेइंतिहा खून–खराबे के साथ ही परवान चढ़ेगी। शांति कायम करने के प्रयासों को इन तमाम संदेहों, आशंकाओं से उलझते हुए, इनसे निपटते हुए धीरे–धीरे आगे बढ़ाना होगा।

अनुपम साही।।

अफगानिस्तान में काबुल यूनिवर्सिटी कैंपस के अंदर सोमवार को हुआ भीषण आतंकी हमला बताता है कि हालिया शांति प्रयासों और अमेरिकी देखरेख में जारी शांति वार्ता के बावजूद देश में हिंसा का तांडव बदस्तूर जारी है। कैंपस के अंदर जिस तरह से पहले एक फिदायीन आतंकी ने खुद को बम से उड़ाया, उसके बाद दो बंदूकधारी छात्रों–शिक्षकों को निशाना बनाते हुए घूमते रहे और सुरक्षाकर्मियों को हालात काबू करने में घंटों लग गए, उससे स्पष्ट है कि इस हमले के पीछे एक व्यवस्थित योजना थी। एक सप्ताह पहले काबुल में ही एक और शिक्षा संस्थान पर हमला हुआ था जिसमें 24 लोग मारे गए थे। दोनों हमलों की जिम्मेदारी आईएस ने ली है। लेकिन दिलचस्प है कि अफगानिस्तान सरकार ने ताजा हमले का दोष 'तालिबान और उन जैसी सोच वाले उनके शैतानी सहयोगियों' पर डाला है। हालांकि तालिबान ने अपनी तरफ से बयान जारी कर कहा कि उसका इस हमले में कोई हाथ नहीं है। गौर करने लायक यह भी है कि सरकार इस घटना की निंदा करके या इसे दुर्भाग्यपूर्ण बताकर ही नहीं रुकी। राष्ट्रपति अशरफ गनी ने घोषणा की कि वे इसका बदला लेंगे। सरकारी अधिकारियों ने भी कहा कि इस घटना का जवाब दिया जाएगा।

अफगानिस्तान के इस घटनाक्रम का संदर्भ कतर में अमेरिकी कोशिशों के तहत चल रही उस शांति वार्ता से जुड़ता है जिसमें अफगान सरकार और तालिबान के प्रतिनिधि आमने–सामने बात कर रहे हैं। कहा जा रहा है कि शांति वार्ता में ठोस प्रगति हुई है, जिसके बाद अमेरिकी प्रतिनिधि ने पाकिस्तान जाकर वहां के सेना प्रमुख कमर जावेद बाजवा से बातचीत की। स्वाभाविक रूप से तालिबान नहीं चाहता कि उसका नाम इस वक्त ऐसे किसी हमले में घसीटा जाए, लेकिन इन हमलों के पीछे जो ताकतें हैं वे नहीं चाहतीं कि शांति प्रक्रिया आगे बढ़े और तालिबान को सत्ता में भागीदारी मिल जाए। एक बड़ी आशंका यह है कि सत्ता का कोई बंटवारा हो भी गया तो उसमें शामिल सभी पक्षों की स्वाभाविक कोशिश पूरी सत्ता पर कब्जा जमाने की होगी, जो बेइंतिहा खून–खराबे के साथ ही परवान चढ़ेगी। शांति कायम करने के प्रयासों को इन तमाम संदेहों, आशंकाओं से उलझते हुए, इनसे निपटते हुए धीरे–धीरे आगे बढ़ाना होगा। लेकिन फिलहाल सबसे बड़ा सवाल यह है कि इसे आगे बढ़ाने वाली मुख्य ताकत अमेरिका की ही आगे इसमें कितनी दिलचस्पी रहेगी। 9/11 के आतंकी हमले के बाद जब अमेरिकी सेना अफगानिस्तान में गई, उसके बाद से अमेरिका में ऐसा कोई राष्ट्रपति चुनाव नहीं हुआ जिसके ठीक पहले मामला सुलटाकर अमेरिकी फौज को वापस बुला लेने का माहौल न बना हो। हर सरकार चुनाव से पहले विभिन्न उपायों के जरिये यह दिखाने की कोशिश करती है कि वह फौज को वापस बुलाने का इंतजाम कर रही है, लेकिन चुनाव निपटते ही ये उपाय ठंडे बस्ते में चले जाते रहे हैं। बहरहाल, अमेरिका में ताजा राष्ट्रपति चुनाव के लिए वोट पड़ चुके हैं। उम्मीद करें कि आगे वहां जो भी सरकार बने वह ढर्रे से हटकर अफगानिस्तान में स्थायी शांति कायम करने की कोशिशों को तार्किक परिणति तक पहुंचाए।

हिन्दू धर्म

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

दूसरे हिन्दू धर्म की अतिप्राचीन वर्ण व्यवस्था को जातिप्रथा के रूप में प्रचारित किया गया ताकि हिन्दू धर्म मे आपसी फूट पड़ जाए। यही कारण है कि आज की युवा पीढ़ी वर्ण एवं जाति के अंतर को नहीं समझ पाती। इस विषय पर एक विस्तृत लेख फिर कभी लिखूंगा। रामायण और रामकथा ऐसी है जिसने सहस्त्रों वर्षों से हिन्दू समाज को जोड़े रखा। अंग्रेजों एवं वामपंथियों ने जब ये देखा तो उन्होंने हिन्दू धर्म मे आपसी फूट पड़वाने के लिए जान बूझ कर ऐसे प्रसंग रामायण में डलवाये जिससे और उन सारी चीजों को उत्तर रामायण में मिलकर उत्तर कांड के रूप में रामायण में जोड़ा गया जिससे रामायण के कांडों की कुल संख्या ७ हो गयी। उन्होंने सभी विवादस्पद चीजें जैसे शम्बूक वध, सीता त्याग, उनकी अग्नि परीक्षा, धोबी द्वारा उनपर लांछन, श्रीराम का लव–कुश को अपना पुत्र मानने पर शंशय के अतिरिक्त और भी कई मिथ्या एवं अनर्गल चीजें हैं।

संपादकीय

सवाल अमल का

वायु प्रदूषण की गंभीरता को देखते हुए केंद्र सरकार ने दिल्ली सहित 38 शहरों पर नजर रखने का फैसला किया है ताकि आने वाले समय में इनके प्रति कुछ बड़े निर्णय लिए जा सकें। लेकिन अब तक के अनुभव को देखते हुए कहना होगा कि बड़े और कड़े फैसले लेने से ज्यादा जरूरी है उन फैसलों पर सही ढंग से अमल सुनिश्चित करना। अगर ढंग से अमल न हुआ तो बड़े से बड़े फैसलों का भी कोई उपयोग नहीं है। विशेषज्ञों के मुताबिक इन सबसे जीवन के रिस्क फैक्टर में 84 प्रतिशत बढ़त हो गई है। साफ है कि हम वायु प्रदूषण को हल्के में नहीं ले सकते। इसके लिए हर तरह से किए जाने वाले प्रयत्नों पर गौर करने की जरूरत है। यह एक ऐसी समस्या है जिसका हल मात्र सरकारी प्रयासों से संभव नहीं है। इसके लिए बड़े स्तर पर जनजागरण की भी आवश्यकता है। हमें व्यक्तिगत स्तर पर भी अपनी कई तरह की गतिविधियों पर अंकुश लगाने होंगे। इनमें निर्माण कार्य, यातायात, उद्योग आदि से जुड़ी ऐसी गतिविधियां शामिल हैं जिन्हें आम तौर पर हम अनिवार्य की श्रेणी में रखते हैं। ऐसे में अगर लोग अपनी जीवनशैली में बदलाव लाते हुए पब्लिक ट्रांसपोर्ट से ही आने–जाने का मन बना लें तो सिर्फ इसी एक उपाय से 30–40 फीसदी प्रदूषण पर अंकुश लगना संभव है। सरकारें फैसला करती रहेंगी और सांस लेना मुश्किल से और ज्यादा मुश्किल होता जाएगा, जैसा कि पिछले काफी समय से होता चला आ रहा है।

सिर्फ भारत में 1 लाख 16 हजार बच्चे उससे प्रभावित हैं। यह आंकड़ा चीन की तुलना में 5 गुना ज्यादा है। भारत में शहरी क्षेत्रों में करीब 40 प्रतिशत बच्चे रहते हैं।

छोटे बच्चों पर ज्यादा असर

अनिल पी जोशी।।

अब अगर प्राणवायु ही प्राण लेने पर उतारू हो जाए, तो फिर कुछ बचने की गुंजाइश कैसे रहेगी। ताजा ग्लोबल एयर रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में जिस तरह की परिस्थितियां बनी हैं उनमें प्राणवायु में सुधार की उम्मीद करना कठिन से कठिनतर होता जा रहा है। रिपोर्ट बताती है कि दुनिया भर में 64 लाख लोग आजकल इसके सीधे शिकार हो रहे हैं। भारत की भी हिस्सेदारी इसमें अच्छी–खासी है। यहां पिछले साल 16 लाख लोग इसकी वजह से मौत का शिकार हुए हैं जो चीन में होने वाली मौतों (18 लाख) से कुछ ही कम है। ठोस अध्ययन के अभाव में अभी प्रामाणिकता और सटीकता के साथ यह नहीं कहा जा सकता कि कोरोना के चलते जो लॉकडाउन हुआ उसके परिणामस्वरूप स्थितियां कितनी बेहतर हुईं। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि लॉकडाउन से प्रदूषण के मोर्चे पर स्थितियों में सुधार हुए। इसकी सबसे बड़ी वजह तो यही रही कि इस दौरान यातायात पर विराम लगा हुआ था।

एक अध्ययन के मुताबिक एलपीजी गैस की योजना से भी गांवों में वायु प्रदूषण में कमी हुई है। लेकिन ऐसे तात्कालिक और छोटे–मोटे सुधारों से बात नहीं बनने वाली। अमेरिकन

एनवायरनमेंट प्रोटेक्शन एजेंसी इंडस्ट्री फाउंडेशन के अनुसार आउटडोर पर्टिकुलेट मैटर के कारण दुनिया में 5 लाख छोटे बच्चों पर असर पड़ रहा है। सिर्फ भारत में 1 लाख 16 हजार बच्चे उससे प्रभावित हैं। यह आंकड़ा चीन की तुलना में 5 गुना ज्यादा है। भारत में शहरी क्षेत्रों में करीब 40 प्रतिशत बच्चे रहते हैं। अगर वहां गैस चौंबर जैसे हालात पैदा हो रहे हैं तो समझा जा सकता है कि देश के भविष्य को हमने किस हाल में रख छोड़ा है। सर्दियों में हालात और खराब इसलिए हो जाते हैं क्योंकि स्मोक और फॉग मिलकर स्मॉग बनाते हैं जो ज्यादा नुकसान पहुंचाता है।

इनमें चिमनियों की कार्बन डाई ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड और सल्फर डाई ऑक्साइड जैसी गैसें मिलकर इसे कहीं ज्यादा खतरनाक बना देती हैं। वायु प्रदूषण बच्चों के लिए ज्यादा घातक इसलिए है कि उनकी हृदय गति उम्रदराज लोगों की तुलना में ज्यादा होती है। भारत में 1000 में से 48 बच्चे इससे प्रभावित हो रहे हैं तो दक्षिण अफ्रीका में 1000 में से 40 बच्चे, ब्राजील में 1000 में से 16 बच्चे और चीन में 1000 में से 10 बच्चे। साफ है कि तुलनात्मक रूप में हम 4 गुना ज्यादा वायु प्रदूषण की चपेट में हैं। अब समय आ गया है कि हम इस चिंता को समझते हुए अपनी रणनीति तय करें। ग्लोबल एयर रिपोर्ट के अनुसार जितनी भी मृत्यु इस साल हुई है, उनमें 12 प्रतिशत मृत्यु प्रदूषित प्राणवायु के कारण हुई है। चीन में 18 लाख 50 हजार, भारत में 16 लाख 70 हजार, पाकिस्तान में 2 लाख 36 हजार, नाइजीरिया में 19 लाख 80 हजार, वियतनाम में 31 हजार 7 सौ और म्यांमार में 74 हजार लोगों की मौत इससे हुई।

वायु प्रदूषण कैसे दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पीएम 2.5, जो कि हवा को खराब करने वाला सबसे बड़ा कारक है, उसमें पिछले 10 वर्षो में करीब 61 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। ओजोन परत में छेद के प्रभावों से जोड़कर देखें तो यह और ज्यादा खतरनाक बन जाता है।

सूडोकु नवताल-5524

सरल

		2				1		
				2	5	7	3	
	9	4		6	7			2
	5		4		3			9
	8			9			7	
1			6		8		2	
6			7	4		9	5	
	4	5	8	3				
		8				6		

Jagrutidaan.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5523 का हल

9	1	6	2	3	7	4	5	8
8	2	3	4	5	9	1	7	6
4	5	7	1	6	8	3	9	2
5	6	8	7	1	2	9	3	4
1	7	4	9	8	3	2	6	5
2	3	9	5	4	6	8	1	7
7	4	1	8	9	5	6	2	3
3	8	5	6	2	1	7	4	9
6	9	2	3	7	4	5	8	1

अपना ब्लॉग

ज्यों की त्यों बनी हुई है समस्या

मोहन। भारत में सालाना निकलने वाली करीब 60 करोड़ टन पराली का जलाया जाना एक अलग समस्या है। इस पर बातें काफी हुई हैं, लेकिन कोई ठोस समाधान इसका अभी तक नहीं निकाला जा सका है। जो समाधान सुझाए जा रहे हैं वे किसानों के हालात से मेल नहीं खाते। इसलिए व्यवहार में उन पर अमल नहीं हो पा रहा और समस्या साल–दर–साल ज्यों की त्यों बनी हुई है। इसके लिए कड़े फैसलों की तरफ जाना होगा क्योंकि जीवन के लिए प्राणवायु सबसे महत्वपूर्ण है। सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में सख्ती दिखाते हुए सरकारों को कहा है कि तत्काल कदम उठाए जाएं। जाहिर है, सरकार सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के अनुरूप नीतियां बनाएगी, लेकिन अपनी जीवनशैली में स्वैच्छिक सुधार से ज्यादा असरदार कुछ और नहीं हो सकता। ध्यान रहे, दिल्ली में ही लाखों की संख्या में एसी और डीजल इंजन वाली गाड़ियां चलती हैं जो वायु प्रदूषण का एक बड़ा स्रोत है।